

NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 28-01-2025

विषय सूची

पृथ्वी के चुंबकीय उत्तरी ध्रुव का स्थानांतरण
अमेरिका ने विदेशी सहायता निलंबित की
सिविल सेवाओं में पार्श्व प्रवेश
भारत-ओमान FTA समझौता वार्ता
बाह्य वाणिज्यिक उधार (ECB) परिदृश्य

संक्षिप्त समाचार

लेज़िम (Lezim)
लाला लाजपत राय
विक्टोरिया झील
ज्वारीय बाढ़ (Tidal Flooding)
एकीकृत पेंशन योजना
पीजोइलेक्ट्रिसिटी (Piezoelectricity)

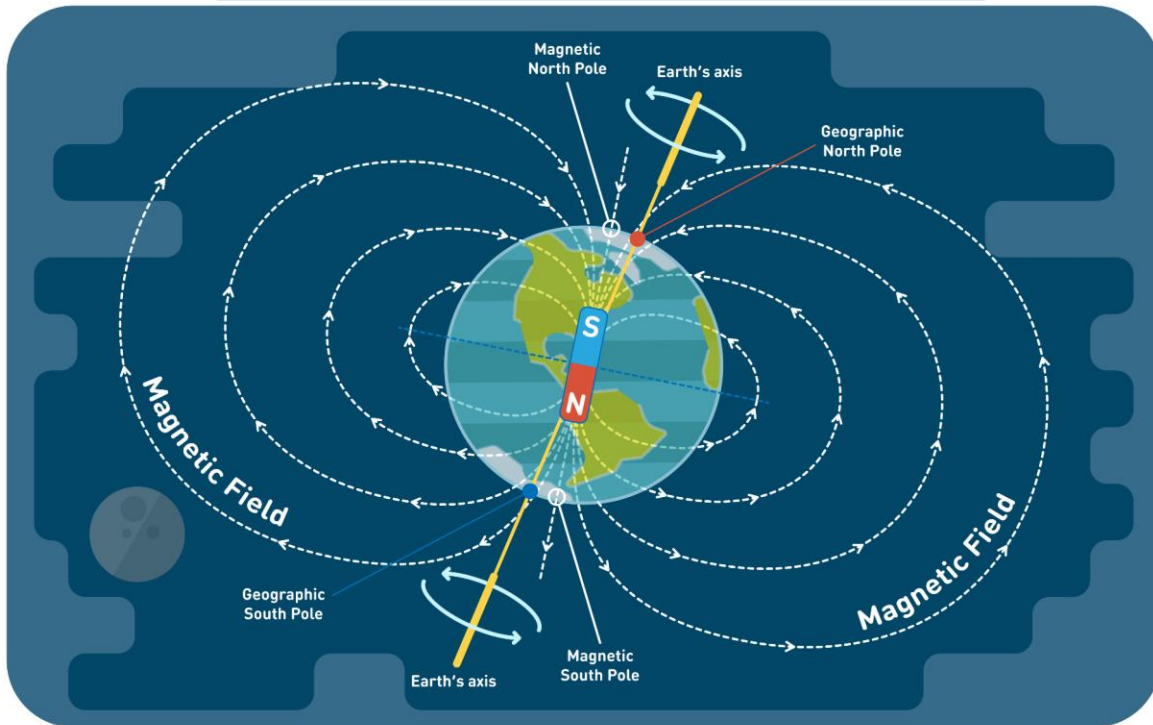
पृथ्वी के चुंबकीय उत्तरी ध्रुव का स्थानांतरण

संदर्भ

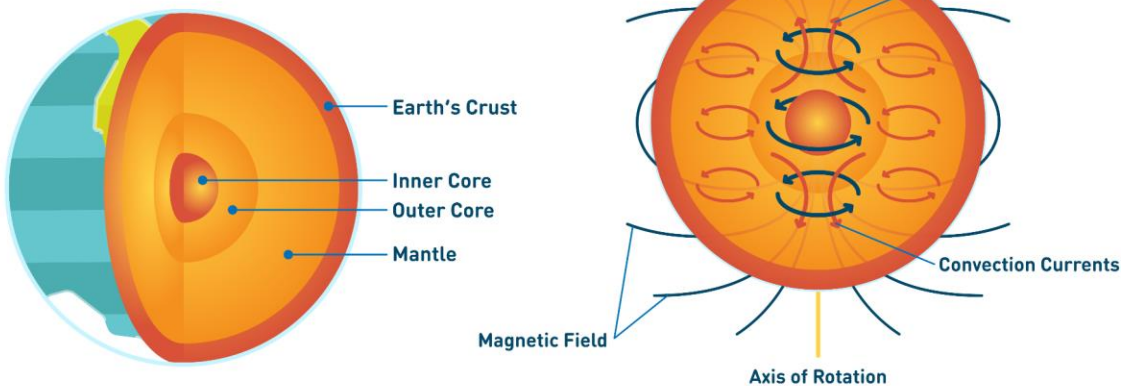
- हाल ही में, वैज्ञानिकों ने चुंबकीय उत्तरी ध्रुव की स्थिति पर नज़र रखने वाला एक नया मॉडल जारी किया है, जिससे पता चला है कि यह पाँच वर्ष पूर्व की तुलना में अब साइबेरिया के अधिक निकट है तथा रूस की ओर बढ़ रहा है।

पृथ्वी के चुंबकीय ध्रुवों का परिचय

- ये पृथ्वी के भू-चुंबकीय क्षेत्र की गतिशील विशेषताएँ हैं, जो पृथ्वी के केंद्र में स्थित बलों द्वारा उत्पन्न होती हैं।
- ये पृथ्वी की सतह पर वे बिंदु हैं जहाँ ग्रह का चुंबकीय क्षेत्र लंबवत नीचे की ओर इंगित करता है।



Earth's Inner Core Currents



चुंबकीय उत्तरी ध्रुव का स्थानांतरण

- चुंबकीय उत्तरी ध्रुव की खोज सर्वप्रथम 1831 में खोजकर्ता जेम्स क्लार्क रॉस ने की थी।
 - उस समय यह कनाडा के आर्कटिक द्वीपों के पास था।
- यह भौगोलिक उत्तरी ध्रुव के विपरीत पृथ्वी के पिघले हुए कोर में होने वाले परिवर्तनों के कारण लगातार बदलता रहता है, जो स्थिर रहता है।
- पिछली शताब्दी में, चुंबकीय उत्तरी ध्रुव कनाडा से रूस की ओर 400 किलोमीटर से अधिक दूर चला गया है।
- इस गतिविधि को विश्व चुंबकीय मॉडल (WMM) का उपयोग करके ट्रैक किया जाता है, जिसे सटीक नेविगेशन सिस्टम सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक पाँच वर्ष में अपडेट किया जाता है।

ध्रुवों के स्थानांतरण के कारण

- **कोर द्रव गतिकी:** पृथ्वी के बाहरी कोर में पिघला हुआ लोहा और निकल ग्रह के आंतरिक कोर से निकलने वाली ऊष्मा से प्रेरित होकर अशांत पैटर्न में गमन करते हैं।
 - ये द्रव गति पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को उत्पन्न करती है और ध्रुव के स्थान को प्रभावित करती है।
- **भू-चुंबकीय विसंगतियाँ:** चुंबकीय क्षेत्र में बदलाव, जैसे कि दक्षिण अटलांटिक विसंगति का कमजोर होना, चुंबकीय क्षेत्र में अस्थिरता का संकेत देता है, जो ध्रुव की गति में योगदान देता है।
- **पृथ्वी का चुंबकीय उत्क्रमण चक्र:** हालाँकि यह आसन्न उत्क्रमण का प्रत्यक्ष संकेत नहीं है, लेकिन ध्रुव की गति भू-चुंबकीय क्षेत्र में दीर्घकालिक परिवर्तनों का संकेत दे सकती है, जो स्वाभाविक रूप से प्रत्येक कुछ सौ हजार वर्षों में उत्क्रमण से गुजरता है।

पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र

- यह अपने बाहरी कोर में पिघले हुए लोहे और निकल की गति से उत्पन्न होता है। यह एक सुरक्षा कवच (चुम्बक मंडल) बनाता है, जो हानिकारक सौर विकिरण और कॉस्मिक किरणों (उच्च ऊर्जा वाले कणों) को रोकता है।

चुम्बकीयमंडल (पृथ्वी का सुरक्षा कवच):

- यह सौर वायु और ब्रह्मांडीय विकिरण के विरुद्ध पृथ्वी की प्रथम रक्षा पंक्ति है।
- यह पृथ्वी के चारों ओर डोनट के आकार के क्षेत्रों, वैन एलन बेल्ट में आवेशित कणों को ट्रैप ग्रह की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- सौर वायु में बदलाव से भू-चुंबकीय तूफान आ सकते हैं, जो उपग्रह संचालन से लेकर पृथ्वी पर विद्युत ग्रिड तक सब कुछ प्रभावित कर सकते हैं।

क्या आप जानते हैं?

- **चुंबकीय उत्क्रमण (जिसे भूचुंबकीय उत्क्रमण भी कहा जाता है):** यह तब होता है जब पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र ध्रुवीयता को विपरीत दिशा में परिवर्तित कर देता है।
 - यद्यपि पृथ्वी के इतिहास में लगभग प्रत्येक 200,000 से 300,000 वर्षों में उत्क्रमण हुआ है, अंतिम उत्क्रमण, ब्रुनहेस-मटुयामा उत्क्रमण, लगभग 780,000 वर्ष पहले हुआ था।

ध्रुव के बदलाव के निहितार्थ

- **नेविगेशन सिस्टम:** चुंबकीय नेविगेशन सिस्टम, जैसे कि विमानन और समुद्री संचालन में उपयोग किए जाने वाले, सटीक चुंबकीय मॉडल पर निर्भर करते हैं।
 - त्वरित बदलाव के कारण सटीकता सुनिश्चित करने के लिए विश्व चुंबकीय मॉडल (WMM) को लगातार अपडेट करना आवश्यक हो जाता है।
- **पशु प्रवास:** पक्षियों और समुद्री जानवरों सहित कई प्रवासी प्रजातियाँ नेविगेशन के लिए पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र पर निर्भर करती हैं।
 - क्षेत्र में परिवर्तन उनके प्राकृतिक पैटर्न को बाधित कर सकते हैं।
- **संचार और उपग्रह:** ध्रुव की गति से जुड़े चुंबकीय क्षेत्र के कमजोर होने से सौर तूफानों के प्रति ग्रह की भेद्यता बढ़ जाती है, जिससे संचार, GPS सिस्टम और पावर ग्रिड बाधित हो सकते हैं।
- **वैज्ञानिक अनुसंधान:** ध्रुव का स्थानांतरण वैज्ञानिकों को भू-गति प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझने और पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र में दीर्घकालिक परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने का अवसर प्रदान करता है।

Source: TOI

अमेरिका ने विदेशी सहायता निलंबित की

समाचार में

- राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के कार्यकारी आदेश के पश्चात्, संयुक्त राज्य अमेरिका ने विदेशी सहायता को निलंबित करने की घोषणा की।
 - यह कदम "अमेरिका फर्स्ट" एजेंडे का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि अमेरिकी वित्तीय सहायता राष्ट्रीय हितों के अनुरूप हो।
 - अमेरिका ऐतिहासिक रूप से विदेशी सहायता के सबसे बड़े दाताओं में से एक रहा है, जिसने अकेले 2023 में 158 देशों को 45 बिलियन डॉलर वितरित किए हैं।

विदेशी सहायता क्या है?

- विदेशी सहायता से तात्पर्य एक देश द्वारा दूसरे देश को दी जाने वाली वित्तीय, तकनीकी या भौतिक सहायता से है।
- इसे सामान्यतः आर्थिक विकास, मानवीय राहत या भू-राजनीतिक उद्देश्यों का समर्थन करने के लिए दिया जाता है।
- विदेशी सहायता अनुदान, ऋण या खाद्य, दवा या बुनियादी ढाँचे जैसे वस्तुगत योगदान के रूप में मिल सकती है।

विदेशी सहायता का महत्व

- **विकास को बढ़ावा देता है:** प्राप्तकर्ता देशों को बुनियादी ढाँचे, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और आर्थिक अवसरों को बेहतर बनाने में सहायता करता है।
- **मानवीय राहत:** प्राकृतिक आपदाओं या संघर्षों जैसे संकटों के दौरान लोगों की जान बचाता है।

- **कूटनीति को बढ़ावा देता है:** दाता और प्राप्तकर्ता देशों के बीच संबंधों को मजबूत करता है।
- **भू-राजनीतिक रणनीति:** प्रमुख क्षेत्रों में प्रभाव बढ़ाता है और गठबंधन को सुरक्षित करता है।
- **वैश्विक स्थिरता:** गरीबी, जलवायु परिवर्तन एवं महामारी जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान करता है, और अधिक स्थिर विश्व व्यवस्था में योगदान देता है।

वैश्विक निहितार्थ

- **प्राप्तकर्ताओं पर प्रभाव:** अफ़गानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे अमेरिकी सहायता पर अत्यधिक निर्भर देशों को वित्तीय कमी एवं विकास संबंधी बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।
- **गठबंधनों में बदलाव:** निलंबन के कारण प्राप्तकर्ता देश सहायता के वैकल्पिक स्रोतों की खोज कर सकते हैं, जिससे भू-राजनीतिक गठबंधनों में संभावित रूप से बदलाव आ सकता है।
- **अन्य दाताओं की भूमिका:** चीन जैसे देश बेल्ट एंड रोड जैसी पहलों के माध्यम से अमेरिकी सहायता में कमी के कारण रिक्त स्थान को भर सकते हैं।
 - उदाहरण: चीन की ऋण जाल कूटनीति, जहां बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं के लिए ऋण ने प्राप्तकर्ता देशों को अस्थिर ऋण में डाल दिया है, जिससे संप्रभुता के बारे में चिंताएँ बढ़ गई हैं।
- **वैश्विक स्थिरता:** सहायता प्रायः वास्तविक मानवीय उद्देश्यों और रणनीतिक उद्देश्यों के मध्य झूलती रहती है। उदाहरण के लिए, कुछ देश राजनीतिक या आर्थिक लाभ के लिए सहायता का उपयोग करते हैं।
- **सामाजिक प्रभाव:** कम सहायता से सुभेद्य क्षेत्रों में गरीबी, अस्थिरता और मानवीय संकट बढ़ सकते हैं।

Source: IE

सिविल सेवाओं में पार्श्व प्रवेश

संदर्भ

- विगत वर्ष विपक्ष और सहयोगी दलों द्वारा कोटा के अभाव पर आपत्ति व्यक्त किए जाने के पश्चात् सरकार की पार्श्व प्रवेश योजना को रोक दिया गया था।

परिचय

- 2019 से इसके अंतर्गत 63 नियुक्तियों की गई हैं।
- 2020 में एक भारतीय वन सेवा अधिकारी ने लेटरल एंट्री योजना को इस आधार पर चुनौती दी थी कि इसमें कानूनी पवित्रता और प्रक्रियात्मक कठोरता का अभाव है।

नौकरशाही में पार्श्व प्रवेश योजना

- यह एक ऐसी प्रथा है जिसमें मध्य और वरिष्ठ स्तर के पदों को भरने के लिए पारंपरिक सरकारी सेवा संवर्गों के बाहर से व्यक्तियों की भर्ती की जाती है।
- **प्रस्तुत:** 2018 में रिक्तियों का प्रथम सेट घोषित किया गया।
- **पात्रता:** ये लोग डोमेन विशेषज्ञ होंगे और महत्वपूर्ण अंतराल को समाप्त करने में सहायता करेंगे।
 - वे निजी कंपनियों, सार्वजनिक क्षेत्र की उपयोगिताओं और राज्य सरकारों से हो सकते हैं।

- **उद्देश्य:** बाहरी विशेषज्ञता का उपयोग करके जटिल शासन और नीति कार्यान्वयन चुनौतियों का समाधान करना।
- **कार्यकाल:** उम्मीदवारों को सामान्यतः तीन से पाँच वर्ष की अवधि के अनुबंध पर रखा जाता है, जिसमें प्रदर्शन के आधार पर संभावित विस्तार होता है।
 - **पृष्ठभूमि:** इसकी सिफारिश सर्वप्रथम 2005 में स्थापित दूसरे प्रशासनिक सुधार आयोग (ARC) ने की थी।
 - इन सिफारिशों में नीति कार्यान्वयन और शासन को बेहतर बनाने के लिए निजी क्षेत्र, शिक्षाविदों और सार्वजनिक उपक्रमों से पेशेवरों की भर्ती पर बल दिया गया था।
 - 2017 में, नीति आयोग ने केंद्र सरकार की नौकरशाही के लिए अखिल भारतीय सेवाओं के बाहर से कर्मियों की भर्ती की सिफारिश की थी।

पक्ष में तर्क

- **प्रतिनियुक्ति पद:** प्रतिनियुक्ति पर नियुक्तियों के लिए कोई अनिवार्य आरक्षण नहीं है, और पार्श्व प्रवेश के माध्यम से पदों को भरने की वर्तमान प्रक्रिया को प्रतिनियुक्ति के करीब माना जाता है।
- **कर्मियों की कमी को संबोधित करना:** बसवान समिति (2016) ने राज्य स्तर पर कमी के कारण केंद्रीय प्रतिनियुक्ति के लिए अधिकारियों को भेजने के लिए बड़े राज्यों (जैसे, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान) की अनिच्छा को प्रकट किया। पार्श्व प्रवेश केंद्रीय स्तर पर इन महत्वपूर्ण अंतरालों को समाप्त करने में सहायता करता है।
- **अल्प अवधि:** पार्श्व-प्रवेश अधिकारी छोटी अवधि (5 वर्ष तक) के लिए एक छोटा पूल हैं, इसलिए, आरक्षण का कोई अर्थ नहीं है।
- **शासन में विशेषज्ञता:** सरकार ने इसे शासन और नीति निर्माण में विशेष प्रतिभा और विशेषज्ञता लाने के साधन के रूप में पेश किया।
- **दक्षता:** निजी क्षेत्र के अनुभव वाले पेशेवर बेहतर प्रबंधन प्रथाओं, तकनीकी जानकारी और रणनीतिक निर्णय लेने के कौशल ला सकते हैं।
- **सहभागी शासन को सुदृढ़ बनाना:** यह निजी क्षेत्र एवं गैर सरकारी संगठनों को शासन में प्रत्यक्ष योगदान करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे यह अधिक समावेशी और सहभागी बनता है।

योजना के विरुद्ध तर्क

- **संवैधानिकता:** अनुच्छेद 309 के अंतर्गत केंद्र सरकार के रोजगारों में भर्ती केवल संसद के अधिनियम या राष्ट्रपति के अधिकार के तहत बनाए गए वैधानिक नियम के माध्यम से हो सकती है।
- **भर्ती में अस्पष्टता:** रिक्तियों का निर्धारण करने, उम्मीदवारों को शॉर्टलिस्ट करने और मूल्यांकन मानदंडों में पारदर्शिता की कमी प्रक्रिया में अविश्वास उत्पन्न करती है।
- **आरक्षण नीतियों को दरकिनार करना:** SCs, STs, OBCs, और अन्य कमजोर वर्गों के लिए आरक्षण की अनुपस्थिति ने समावेशिता की उपेक्षा करने के लिए आलोचना की है।
 - उदाहरण के लिए, लेटरल एंट्री में आरक्षण की 13-पॉइंट रोस्टर प्रणाली लागू नहीं की गई है।

- **नौकरशाही प्रक्रियाओं से परिचित न होना:** सिविल सेवक नौकरशाही प्रणाली और प्रोटोकॉल में महारत हासिल करने में दशकों बिता देते हैं। लेटरल एंट्री करने वालों में प्रायः इन प्रक्रियाओं के व्यावहारिक अनुभव और समझ की कमी होती है, जिससे अक्षमताएँ उत्पन्न होती हैं।
- **छोटी अवधि और सीमित प्रभाव:** अनुबंध सामान्यतः 3-5 वर्ष के लिए होते हैं, जिससे लेटरल एंट्री करने वालों को अनुकूल होने और प्रभावशाली परिणाम देने के लिए बहुत कम समय मिलता है। नौकरशाही संरचना में उनका एकीकरण अक्सर अधूरा होता है।
- **संभावित हितों का टकराव:** निजी क्षेत्र के प्रवेशकर्ता लोक कल्याण की अपेक्षा अधिकतम लाभ को प्राथमिकता दे सकते हैं, जिससे नीतिगत पूर्वाग्रह के बारे में चिंताएँ बढ़ सकती हैं।

आगे की राह

- **लोक प्रशासन विश्वविद्यालय की स्थापना:** महत्वाकांक्षी सिविल सेवकों को प्रशिक्षित करना तथा शासन, अर्थशास्त्र और प्रबंधन में ज्ञान में सुधार करना।
 - सेवारत नौकरशाहों को डोमेन विशेषज्ञता और उन्नत प्रबंधकीय कौशल प्राप्त करने में सक्षम बनाना।
- **निजी क्षेत्र में प्रतिनियुक्ति:** आईएस और आईपीएस अधिकारियों को निजी क्षेत्र के संगठनों में काम करने की अनुमति देना।
 - क्रॉस-सेक्टरल लर्निंग को बढ़ावा देना, विशेषज्ञता को बढ़ाना और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना।
- **लक्ष्य निर्धारण और ट्रेकिंग को संस्थागत बनाना:** जवाबदेही और प्रगति सुनिश्चित करने के लिए नियमित निगरानी एवं मूल्यांकन।
- **क्षमता निर्माण आयोग और मिशन कर्मयोगी का उपयोग करना:** कौशल वृद्धि के लिए अधिकारियों और पार्श्व प्रवेशकों को मध्य-करियर प्रशिक्षण प्रदान करना।
 - आधुनिक शासन प्रथाओं, नीति कार्यान्वयन और नेतृत्व विकास पर ध्यान केंद्रित करना।

Source: IE

भारत-ओमान FTA समझौता वार्ता

संदर्भ

- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री भारत और ओमान के बीच मुक्त व्यापार समझौता (FTA) वार्ता को "और गति" देने के लिए ओमान की यात्रा करेंगे।

परिचय

- वार्ता में व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (CEPA) पर बातचीत को आगे बढ़ाने, व्यापार और निवेश संबंधों को मजबूत करने एवं द्विपक्षीय साझेदारी को और गहरा करने के लिए रास्ते खोजने पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- **FTA:** ऐसे समझौतों में, दो व्यापारिक साझेदार अपने मध्य व्यापार की जाने वाली वस्तुओं की अधिकतम संख्या पर सीमा शुल्क को या तो काफी कम कर देते हैं या समाप्त कर देते हैं।
 - वे सेवाओं में व्यापार को बढ़ावा देने और निवेश आकर्षित करने के लिए मानदंडों को भी आसान बनाते हैं।

- यह यात्रा इस बात को रेखांकित करती है कि भारत खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) के महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदारों में से एक ओमान के साथ अपने व्यापार और निवेश संबंधों को कितना महत्व देता है।
 - भारत का पहले से ही GCC के एक अन्य सदस्य UAE के साथ एक ऐसा ही समझौता है जो 2022 में लागू हुआ।

भारत-ओमान संबंध

- **व्यापार संबंध:** वित्त वर्ष 2023-2024 में ओमान भारत का 30वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, जिसका कुल व्यापार 8.947 बिलियन अमेरिकी डॉलर है।
 - भारत ओमान के शीर्ष व्यापारिक साझेदारों में से एक है।
 - वर्ष 2023 के लिए ओमान के कच्चे तेल के निर्यात के लिए भारत चौथा सबसे बड़ा बाज़ार है।
- **रक्षा सहयोग:** भारत और ओमान तीनों सेनाओं के बीच नियमित द्विवार्षिक द्विपक्षीय अभ्यास आयोजित करते हैं।
 - सेना अभ्यास: अल नजाह
 - वायुसेना अभ्यास: ईस्टर्न ब्रिज
 - नौसेना अभ्यास: नसीम अल बहर
- **समुद्री सहयोग:** ओमान होर्मुज जलडमरूमध्य के प्रवेश द्वार पर है, जिसके माध्यम से भारत अपने तेल आयात का पाँचवाँ भाग आयात करता है।
 - भारत ने 2018 में ओमान के दुक़म बंदरगाह तक पहुँचने के लिए देश के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।
 - दुक़म बंदरगाह ओमान के दक्षिण-पूर्वी समुद्र तट पर स्थित है, जहाँ से अरब सागर और हिंद महासागर दिखाई देते हैं। यह रणनीतिक रूप से ईरान के चाबहार बंदरगाह के बहुत नज़दीक स्थित है।

GCC के संबंध में

- यह छह मध्य पूर्वी देशों-सऊदी अरब, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, बहरीन और ओमान का एक राजनीतिक और आर्थिक गठबंधन है।
- इसकी स्थापना 1981 में हुई थी।
- इसका उद्देश्य अपने सदस्यों के बीच उनके सामान्य उद्देश्यों और उनकी समान राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पहचान के आधार पर एकता प्राप्त करना है, जो अरब तथा इस्लामी संस्कृतियों में निहित हैं।
- परिषद की अध्यक्षता वार्षिक परिवर्तित होती रहती है।



आगे की राह

- भारत को खाड़ी देशों के पास लाने में वास्तविक राजनीति और रणनीतिक हित महत्वपूर्ण रहे हैं, दोनों पक्ष हाल ही में अपने कुछ वैचारिक मतभेदों को नजरअंदाज करने के लिए तैयार हैं।
- लंबे समय में, रक्षा औद्योगिक सहयोग और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण संभवतः उनके रणनीतिक सहयोग का एक महत्वपूर्ण घटक बन जाएगा।
- इसलिए, राजनीतिक, आर्थिक, तकनीकी और सैन्य-सुरक्षा हितों का अभिसरण, खाड़ी देशों के साथ भारत की सैन्य कूटनीति को आगे बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

Source: BS

बाह्य वाणिज्यिक उधार (ECB) परिदृश्य

समाचार में

- भारत के निवेश पारिस्थितिकी तंत्र और बाह्य वाणिज्यिक उधार (ECBs) में विगत कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण विकास हुआ है।

परिचय

- भारतीय स्टेट बैंक (SBI) की हालिया रिपोर्ट में निवेश घोषणाओं, निजी क्षेत्र के योगदान और कॉर्पोरेट वित्तपोषण में ECBs की भूमिका के रुझानों पर प्रकाश डाला गया है।
- भारत में घरेलू शुद्ध वित्तीय बचत (HNFS) वित्त वर्ष 23 में 5.0% से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में GDP का 5.3% हो गई।
- हाल के वर्षों में GDP के हिस्से के रूप में निवेश में सुधार हुआ है, जिसका नेतृत्व सरकार और निजी क्षेत्र दोनों के योगदान से हुआ है।

बाह्य वाणिज्यिक उधार

- बाह्य वाणिज्यिक उधार, पात्र निवासी संस्थाओं द्वारा मान्यता प्राप्त गैर-निवासी संस्थाओं से लिए गए वाणिज्यिक ऋण हैं।
- इन उधारों को न्यूनतम परिपक्वता, अनुमत और गैर-अनुमत अंतिम उपयोग, अधिकतम समग्र लागत सीमा आदि जैसे मापदंडों के अनुरूप होना चाहिए।

रूपरेखा और दिशा-निर्देश

EXTERNAL COMMERCIAL BORROWINGS FRAMEWORK		
Parameters	FCY denominated ECB	INR denominated ECB
Currency of borrowing	Any freely convertible Foreign Currency	Indian Rupee (INR)
Forms of ECB	Loans including bank loans; floating/ fixed rate notes/ bonds/debentures (other than fully and compulsorily convertible instruments); Trade credits beyond 3 years; FCCBs; FCEBs and Financial Lease.	Loans including bank loans; floating/ fixed rate notes/bonds/debentures/ preference shares (other than fully and compulsorily convertible instruments); Trade credits beyond 3 years; and Financial Lease. Also, plain vanilla Rupee denominated bonds issued overseas, which can be either placed privately or listed on exchanges as per host country regulations.
Eligible borrowers	All entities eligible to receive FDI. Further, the following entities are also eligible to raise ECB: i. Port Trusts; ii. Units in SEZ; iii. SIDBI; and iv. EXIM Bank of India	a) All entities eligible to raise FCY ECB; and b) Registered entities engaged in micro-finance activities, viz., registered Not for Profit companies, registered societies/trusts/ cooperatives and Non-Government Organisations
Minimum Average Maturity Period (MAMP)	MAMP for ECB will be 3 years. Call and put options, if any, shall not be exercisable prior to completion of minimum average maturity. However, for the specific categories mentioned below, the MAMP will be as prescribed therein ECB raised by manufacturing companies up to USD 50 million or its equivalent per financial year - 1 Year ECB raised from foreign equity holder for working capital purposes, general corporate purposes or for repayment of Rupee loans - 5 year ECB raised for (i) working capital purposes or general corporate purposes (ii) on-lending by NBFCs for working capital purposes or general corporate purposes - 10 years ECB raised for (i) repayment of Rupee loans availed domestically for capital expenditure (ii) on-lending by NBFCs for the same purpose - 7 years ECB raised for (i) repayment of Rupee loans availed domestically for purposes other than capital expenditure (ii) on-lending by NBFCs for the same purpose - 10 years	

SBI की हालिया रिपोर्ट का डेटा विश्लेषण

- **बाह्य वाणिज्यिक उधार (ECBs)** (सितंबर 2024 तक) भारतीय कॉर्पोरेट्स के लिए वित्तपोषण के एक प्रमुख स्रोत के रूप में उभरे हैं, जो पूंजी विस्तार और आधुनिकीकरण को सक्षम बनाते हैं।
 - सितंबर 2024 तक कुल बकाया ECBs \$190.4 बिलियन था।
 - इसमें से गैर-रुपया और गैर-FDI घटकों का हिस्सा लगभग \$154.9 बिलियन था।
 - निजी क्षेत्र के पास 63% (\$97.58 बिलियन) था, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के पास 37% (\$55.5 बिलियन) था।
 - हेजिंग एक महत्वपूर्ण पहलू बना हुआ है, जिसमें निजी कंपनियाँ कुल हेज्ड कॉर्पस का लगभग 74% हेज करती हैं।
 - वित्त वर्ष 25 में ECBs (नवंबर 2024 तक): ECBs पाइपलाइन मजबूत बनी हुई है, जो विदेशी फंडिंग की निरंतर मांग को दर्शाती है।

भारत में ECB की आवश्यकता

- **पूंजी की कमी:** घरेलू वित्तीय बाजार बड़ी कंपनियों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते हैं।
- **कम ब्याज दरें:** ECBs प्रायः घरेलू ऋणों की तुलना में कम दरों की पेशकश करते हैं, जिससे पूंजी की लागत कम हो जाती है।
- **बुनियादी ढाँचे की कमी को पूरा करना:** भारत के बुनियादी ढाँचे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता है।
- **वित्त पोषण का विविधीकरण:** वैश्विक बाजारों तक पहुंच घरेलू बैंकों पर निर्भरता कम करती है।
- **निर्यात-उन्मुख क्षेत्रों के लिए समर्थन:** व्यवसायों को आधुनिक बनाने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बने रहने में सहायता करता है।
- **कॉर्पोरेट विकास को बढ़ावा:** विस्तार, प्रौद्योगिकी उन्नयन और बेहतर बाजार स्थिति को सक्षम बनाता है।

ECBs की सीमाएँ और जोखिम

- **मुद्रा जोखिम:** घरेलू मुद्रा के अवमूल्यन की स्थिति में विनिमय दर में उतार-चढ़ाव से पुनर्भुगतान लागत बढ़ सकती है।
- **ब्याज दर जोखिम:** वैश्विक बेंचमार्क (जैसे, LIBOR) से जुड़ी परिवर्तनीय ब्याज दरें दरों में वृद्धि के साथ ऋण को महंगा बना सकती हैं।
- **पुनर्भुगतान जोखिम:** कम परिपक्वता अवधि पुनर्वित्त चुनौतियों का कारण बन सकती है, विशेषकर यदि धन आसानी से उपलब्ध न हो।
- **नियामक बाधाएँ:** उधार सीमा, अंतिम उपयोग और अनुपालन पर RBI के सख्त नियम लचीलेपन को सीमित कर सकते हैं।
- **समष्टि आर्थिक जोखिम:** ECB पर अत्यधिक निर्भरता राष्ट्रीय बाह्य ऋण को बढ़ा सकती है और विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव डाल सकती है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- वैश्विक पूंजी तक पहुंच बनाने और बड़े पैमाने की परियोजनाओं को वित्तपोषित करने की चाहत रखने वाली भारतीय कंपनियों के लिए बाहरी वाणिज्यिक उधारी एक आवश्यक साधन बन गया है।
- ECBs भारत के विकास को बढ़ावा देने की महत्वपूर्ण क्षमता प्रदान करते हैं, विशेष रूप से बुनियादी ढाँचे, प्रौद्योगिकी और निर्यात जैसे क्षेत्रों में।
- हालांकि, कंपनियों को बाहरी उधारी का विकल्प चुनने से पहले अपनी वित्तीय स्थिति और जोखिम उठाने की क्षमता का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे इस वित्तीय साधन का प्रभावी एवं स्थायी रूप से लाभ उठा रहे हैं।

Source :PIB

संक्षिप्त समाचार

लेज़िम (Lezim)

संदर्भ

- छत्रपति संभाजी महाराज पर आधारित हिंदी फिल्म 'छावा' विवाद में आ गई है, क्योंकि लोगों ने इसके एक लेज़िम नृत्य दृश्य पर आपत्ति व्यक्त की है।

परिचय

- लेज़िम या लाज़ियम महाराष्ट्र राज्य का एक लोक नृत्य है।
- इसका नाम एक संगीत वाद्ययंत्र के नाम पर पड़ा है - एक अनोखी लकड़ी की छड़ी, जिस पर झनझनाती झांझें लगी होती हैं, जिसे नर्तक नृत्य करते समय अपने साथ लेकर चलते हैं।
 - पहले लिज़ेम का उपयोग पारंपरिक रूप से सभी लोक नृत्यों में एक वाद्ययंत्र के रूप में किया जाता था, लेकिन आज इसका इस्तेमाल मुख्य रूप से गणेश जुलूस में किया जाता है।



- परंपरागत रूप से, यह महाराष्ट्र में मराठा योद्धाओं द्वारा अपनी मांसपेशियों और फिटनेस अभ्यास बनाने के लिए एक खेल के रूप में किया जाता था।
 - लेज़िम लोक नृत्य की शुरुआत वर्ष 1986 में हुई, जब कुछ समुदायों ने इसे करना शुरू किया।

छत्रपति संभाजी महाराज

- छत्रपति संभाजी महाराज छत्रपति शिवाजी महाराज के सबसे बड़े पुत्र थे। 1681 में अपने सौतेले भाई राजाराम के साथ खूनी उत्तराधिकार युद्ध के बाद वे सत्ता में आए।
- मुगल सम्राट औरंगजेब (1618-1707) उनके समकालीन थे और दक्कन की ओर अपने साम्राज्य का विस्तार करने की उनकी योजना के कारण प्रायः मराठों के साथ संघर्ष हुआ।

Source: IE

लाला लाजपत राय

समाचार में

- भारत लाला लाजपत राय को उनकी 160वीं जयंती पर स्मरण किया।

जन्म और प्रारंभिक जीवन:

- 28 जनवरी 1865 को पंजाब के लुधियाना जिले के धुडिके में जन्मे। वे बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल के साथ "लाल बाल पाल" तिकड़ी में से एक थे।
 - उन्होंने शुद्धि आंदोलन का समर्थन किया।
- **योगदान:** 1882 में आर्य समाज में शामिल हुए और इसके प्रमुख नेताओं में से एक बन गए।
 - सामाजिक कल्याण, अकाल राहत और अस्पृश्यता उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
 - अकाल से पीड़ित लोगों की सहायता करने और मिशनरी प्रभाव को रोकने के लिए 1897 में हिंदू राहत आंदोलन की स्थापना की।
 - उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक, लक्ष्मी इंड्योरेंस कंपनी और सर्वेड्स ऑफ द पीपल सोसाइटी की स्थापना की।
 - वे शैक्षिक उद्देश्यों के लिए DAV कॉलेज की स्थापना से जुड़े थे।
- **लेखन और वकालत:** मैज़िनी, गैरीबाल्डी, शिवाजी और स्वामी दयानंद पर आत्मकथाएँ लिखीं।
 - कैथरीन मेयो की "मदर इंडिया" के जवाब में "अनहैप्पी इंडिया" और यंग इंडिया: एन इंटरप्रिटेशन लिखी।
 - भारत की स्वतंत्रता और संस्कृति की वकालत करने के लिए अपने लेखन का उपयोग किया।
- **राजनीतिक गतिविधियाँ और राष्ट्रवाद:** ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों का विरोध किया, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक प्रमुख नेता बने।
 - 1905 में बंगाल के विभाजन के बाद स्वदेशी की वकालत की और ब्रिटिश दमन का विरोध किया।
 - "मध्यम" राजनीति की आलोचना की, अधिक प्रत्यक्ष कार्रवाई और आत्मनिर्भरता की वकालत की।
 - उन्हें व्यापक रूप से पंजाब केसरी के रूप में जाना जाता था।
- **निर्वासन और अंतर्राष्ट्रीय प्रयास:** 1907 में निर्वासन में चले गए, ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध बोलते हुए इंग्लैंड और USA का दौरा किया।

- भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने के लिए "इंडियन होम रूल लीग ऑफ़ अमेरिका" की शुरुआत की।
- **भारत वापसी और बाद में योगदान:** कलकत्ता (1920) में आयोजित कांग्रेस के विशेष सत्र में लाला लाजपत राय को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा अध्यक्ष चुना गया।
 - यह उनके नेतृत्व में था कि कांग्रेस ने जलियांवाला बाग त्रासदी के बाद ब्रिटिश सरकार के साथ असहयोग का प्रस्ताव अपनाया।
- **अंतिम संघर्ष और मृत्यु:** 1928 में साइमन कमीशन के विरुद्ध बहिष्कार जुलूस का नेतृत्व किया।
 - 30 अक्टूबर 1928 को पुलिस लाठीचार्ज में घातक चोटें आईं, 17 नवंबर 1928 को उनकी मृत्यु हो गई।
- **विरासत:** स्वतंत्रता आंदोलन, सामाजिक सुधार और शिक्षा में लाला लाजपत राय का योगदान पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।
 - उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए देशभक्ति, बलिदान और प्रेरणा की विरासत छोड़ी।

Source :Air

विक्टोरिया झील

संदर्भ

- उत्तरी अमेरिका और केन्या के शोधकर्ताओं की एक अंतरराष्ट्रीय टीम ने केन्या के विक्टोरिया झील के विनाम खाड़ी में साइनोबैक्टीरिया का आनुवंशिक सर्वेक्षण पूरा कर लिया है।

परिचय

- **साइनोबैक्टीरिया**, जिसे पहले नीले-हरे शैवाल के रूप में जाना जाता था, स्वच्छ जल और समुद्री वातावरण में घने और कभी-कभी जहरीले फूल बनाते हैं।
 - ये फूल पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करते हैं, पानी की गुणवत्ता को खराब करते हैं और मनुष्यों, पशुओं और जलीय जीवन के लिए गंभीर जोखिम उत्पन्न करते हैं।
- **विनाम खाड़ी**, जो वर्ष भर प्रचुर मात्रा में साइनोHAB के लिए जानी जाती है, विक्टोरिया झील के सबसे अधिक उत्पादक मछली पकड़ने वाले बेसिनों में से एक है।
 - अध्ययन में खाड़ी के विभिन्न क्षेत्रों में साइनोबैक्टीरियल संयोजन, कार्य और जैवसंश्लेषण क्षमता की जांच की गई।

विक्टोरिया झील

- यह विश्व की सबसे बड़ी उष्णकटिबंधीय झील है।
- यह अफ्रीका की सबसे बड़ी झील भी है, और सतह क्षेत्र के हिसाब से विश्व की दूसरी सबसे बड़ी स्वच्छ की झील है (उत्तरी अमेरिका में सुपीरियर झील के बाद)।
- इस झील का नाम इंग्लैंड की रानी विक्टोरिया के सम्मान में रखा गया था।
- यह पूर्वी अफ्रीका में स्थित है, जो तीन देशों: तंजानिया, युगांडा और केन्या की सीमाओं तक फैला हुआ है।



- यह झील नील नदी के मुख्य जलाशय के रूप में कार्य करती है।
- यह झील उन लाखों लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है जो अपनी प्राथमिक आजीविका के रूप में मछली पकड़ने पर निर्भर हैं।

Source: DTE

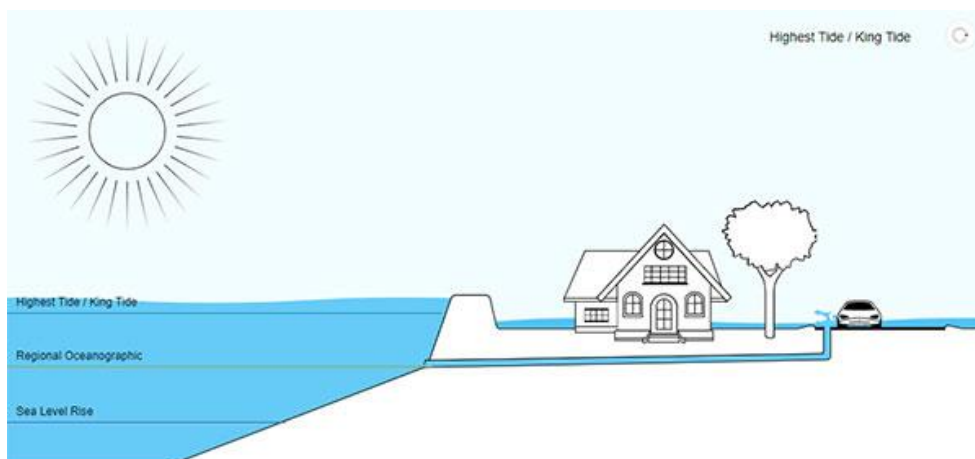
ज्वारीय बाढ़ (Tidal Flooding)

संदर्भ

- केरल के एर्नाकुलम जिले में हाल ही में ज्वारीय बाढ़ आना सामान्य घटना हो गई है।

ज्वारीय बाढ़

- ज्वारीय बाढ़, जिसे "उपद्रव बाढ़" या "धूप वाले दिन बाढ़" के रूप में भी जाना जाता है, तब होती है जब उच्च ज्वार के कारण जल स्तर बढ़ जाता है और निचले तटीय क्षेत्रों में बाढ़ आ जाती है।
- **कारण:** प्रचलित हवाओं में परिवर्तन, समुद्री धाराओं में बदलाव और मजबूत ज्वारीय बल (जो पूर्णिमा या अमावस्या के दौरान होते हैं) सभी उच्च ज्वार बाढ़ का कारण बन सकते हैं।
- उच्च ज्वार बाढ़ गंभीरता के तीन स्तरों में आती है: मामूली, मध्यम और प्रमुख।



• चिन्ताएँ:

- ज्वारीय बाढ़ सड़कों और सेवाओं को जलमग्न करके दैनिक जीवन को बाधित करती है, बुनियादी ढाँचे को हानि पहुँचती है, और व्यवसायों के लिए आर्थिक हानि का कारण बनती है।
- यह तटीय कटाव को तेज करता है, आवासों को हानि पहुँचता है, और लवणीय जल से स्वच्छ जल की आपूर्ति को दूषित करता है।
- बार-बार बाढ़ आने से समुदायों को स्थानांतरित होने के लिए मजबूर होना पड़ता है। समय के साथ, जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र का बढ़ता स्तर ज्वारीय बाढ़ को अधिक लगातार और गंभीर बना देगा।

Source: TH

एकीकृत पेंशन योजना

समाचार में

- वित्त मंत्रालय ने राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (NPS) के अंतर्गत आने वाले श्रमिकों के लिए एकीकृत पेंशन योजना (UPS) को अधिसूचित किया, जो 1 अप्रैल, 2025 से प्रभावी होगी।

एकीकृत पेंशन योजना(UPS)

- पूर्व वित्त सचिव टी.वी. सोमनाथन की अध्यक्षता वाले पैनल ने NPS के विकल्प के रूप में UPS की सिफारिश की थी।
- पेंशन फंड विनियामक और विकास प्राधिकरण (PFRDA) सेवानिवृत्त लोगों के लिए UPS चुनने की व्यवस्था तय करेगा, जिसमें उनके NPS भुगतान के सापेक्ष टॉप-अप राशि को संबोधित किया जाएगा।
- यह कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति से पहले अंतिम 12 महीनों में उनके औसत मूल वेतन का 50% सुनिश्चित पेंशन प्रदान करेगा, जो कि न्यूनतम 25 वर्ष की सेवा के लिए होगा।
- **अतिरिक्त लाभ:** UPS में सरकारी कर्मचारी की मृत्यु पर उनकी पेंशन का 60% पारिवारिक पेंशन, एकमुश्त सेवानिवृत्ति भुगतान और ग्रेजुटी लाभ शामिल हैं।
 - केंद्र सरकार में कम से कम 10 वर्ष की सेवा करने वालों के लिए न्यूनतम 10,000 रुपये प्रति माह पेंशन का वादा किया गया है।

NPS बनाम UPS:

- 2004 में शुरू की गई NPS में सुनिश्चित पेंशन की पेशकश नहीं की गई थी। हालांकि, UPS अंतिम आहरित वेतन के 50% की गारंटीकृत पेंशन बहाल करता है, जिसमें मुद्रास्फीति से जुड़ी आवधिक महंगाई राहत शामिल है।
- NPS के तहत पहले से ही कवर किए गए केंद्र सरकार के कर्मचारी UPS विकल्प चुन सकते हैं। जो लोग UPS का विकल्प नहीं चुनते हैं, वे NPS में बने रहेंगे, उन्हें कोई गारंटीकृत पेंशन नहीं मिलेगी।
- UPS का विकल्प चुनने वाले कर्मचारी अन्य वित्तीय लाभ, नीति परिवर्तन या भविष्य के सेवानिवृत्त लोगों के साथ समानता का दावा नहीं कर सकते हैं।

Source :TH

पीजोइलेक्ट्रिसिटी (Piezoelectricity)**समाचार में**

- हाल ही में, IIT कानपुर के लेखक ने स्टोव लाइट की कार्यप्रणाली में पीजोइलेक्ट्रिक सामग्रियों की भूमिका और उनकी चिंगारी उत्पन्न करने की क्षमता के बारे में बताया।

स्टोव-लाइट के संबंध में

- स्टोव-लाइट क्लिक करने पर एक छोटी सी चिंगारी उत्पन्न करता है। यह चिंगारी, हालांकि हानिरहित प्रतीत होती है, विद्युत आवेशों का परिणाम है।
 - जब दो बिंदुओं के बीच इलेक्ट्रॉन की मात्रा में अंतर होता है, तो विद्युत चिंगारी उत्पन्न होती है।
 - एक बिंदु पर इलेक्ट्रॉनों की अधिकता (नकारात्मक) होती है, और दूसरे पर कमी (सकारात्मक), जिसके कारण इलेक्ट्रॉन चलते हैं और चिंगारी उत्पन्न करते हैं।
- बिजली अनिवार्य रूप से एक बड़े पैमाने पर विद्युत चिंगारी है जो आकाश में आवेशित बादलों के बीच अत्यधिक इलेक्ट्रॉन असंतुलन के कारण होती है, जो अणुओं को तोड़ने के बाद हवा के माध्यम से चिंगारी उत्पन्न करती है।

पीजोइलेक्ट्रिसिटी

- पीजोइलेक्ट्रिसिटी एक ठोस पदार्थ में लागू यांत्रिक तनाव और इसके विपरीत द्वारा विद्युत आवेश का उत्पादन है।
- पीजोइलेक्ट्रिक प्रभाव उन पदार्थों में प्रदर्शित होता है जो एक शुद्ध विद्युत द्विध्रुवीय क्षण विकसित करते हैं।
 - ऐसी सामग्रियों में, यांत्रिक तनाव के जवाब में द्विध्रुवीय घनत्व या ध्रुवीकरण बदल जाता है जिसके परिणामस्वरूप आवेश का शुद्ध संचय होता है।
- पीजोइलेक्ट्रिक सामग्री कैसे कार्य करती है: अपनी प्राकृतिक अवस्था में, पीजोइलेक्ट्रिक सामग्रियों में बारी-बारी से सकारात्मक और नकारात्मक आयन होते हैं। जब दबाव लगाया जाता है, तो आयन शिफ्ट

हो जाते हैं, जिससे आवेश असंतुलन उत्पन्न होता है और उच्च वोल्टेज उत्पन्न होता है, जिससे चिंगारी निकलती है।

- **अनुप्रयोग:** ऊर्जा रूपांतरण, संवेदन और ऊर्जा संचयन, स्वास्थ्य निगरानी और बहुत कुछ में अनुप्रयोगों के लिए पीजोइलेक्ट्रॉनिक्स महत्वपूर्ण हैं।
 - लाइटर पीजोइलेक्ट्रिक सामग्रियों का उपयोग करते हैं जो दबाव लागू होने पर इलेक्ट्रॉनों की अधिकता और कमी उत्पन्न करते हैं। इन सामग्रियों में एक विशिष्ट परमाणु संरचना होती है जो उन्हें दबाव में विद्युत आवेश उत्पन्न करने की अनुमति देती है।

Source :TH

